इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

Q. महात्मा गाँधी के सामाजिक - राजनैतिक विचार ।

Sol. महात्मा गाँधी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के मुख्य पुरोधा के रूप में जाने जाते हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सन्य अहिंसा के आधार पर नवीन अवधारणा सत्याग्रह जिसने जनमानस में सामाजिक-राजनीतिक चेतना का प्रसार किया तथा जो सर्वहित मंगलकामना के लिए औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध व्यापक, परिणामोन्मुखी जन आंदोलन का आधार बना। उल्लेखनीय है कि उनके नेतृत्व में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त किया था वैश्विक जगत में नागरिक अधिकारों और अन्य राष्ट्रों के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रेरणा स्रोत बने।

महात्मा गाँधी केवल राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रनायक मात्र नहीं बल्कि समाज के समस्त वर्गों एवं उनके जीवन के सभी पक्षों (समाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक इत्यादि) में रचनात्मक परिवर्तन के लिए सुधारात्मक कार्यक्रमों संबंधित अनेकों कार्य एवं सिद्धांत प्रस्तुत किए-

जिसमें सर्वोदय सामाजिक-राजनैतिक आदर्श से संबंधित एक अवधारणा है, जिसका लक्ष्य ऐसे सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करना हैं, जिसमें शोषण, संघर्ष एवं पतियोगिता के स्थान पर सहयोग एवं प्रेम, विषमता के स्थान पर समता, वर्गहित के स्थान पर सर्वहित की मंगलकामना निहित है।

✦ **<u>सर्वोदय के विभिन्न आयाम</u>**

सर्वोदय की आवधारणा के निम्नलिखित आयाम हैं- आर्थिक आयाम, सामाजिक आयाम, राजनैतिक आयाम, धार्मिक एवं नैतिक आयाम।

✦ **<u>आर्थिक आयाम</u>**

महात्मा गाँधी सर्वोदय के आर्थिक पक्ष में निम्न बातों को सम्मिलित करते हैं।
महात्मा गाँधी सर्वोदयी समाज में सभी व्यक्तियों के श्रम करने पर बल देते हैं ताकि उनका आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके तथा परनिर्भरता का भाव समाप्त हो सके। श्रम ही जीवन में गरिमा प्रदान करता है।

उन्होंने नाई एवं वकील दोनों के श्रम की कीमत एवं महत्ता को समान रूप से स्वीकार करते हैं। दोनों समान रूप से उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है। वस्तुत: महात्मा गाँधी यह कहना चाहते हैं कि शारीरिक एवं बौद्धि श्रम में सामाजिक एवं आर्थिक विभेद स्थापित नहीं होना चाहिए।

✦ **<u>न्यास का सिद्धांत (ट्रस्टीशिप)</u>**

महात्मा गाँधी आर्थिक न्याय हेतु अर्थात समाज में आर्थिक विषमता निवारण हेतु ट्रस्टीशिप की अवधारणा का समर्थन करते है अर्थात् धनी व्यक्ति अपनी सम्पत्ति के उतने ही भागों का उपयोग करेगा जितनी उसकी आवश्यकता हो तथा शेष सम्पत्ति को समाज की धरोहर मानकर उसका उपयोग समाज के हित में करेगा।

आशय है कि वह अपनी अतिरिक्त सम्पत्ति का केवल संरक्षक के रूप में भूमिका निर्वहन करेगा। ट्रस्टीशिप की इस अवधारणा के पीछे अपरिग्रह (धन संग्रह न करना) की अवधारणा विद्यमान है।

यहाँ यह भी मंतव्य निहित है कि 'सबै भूमि गोपाल की' कहने का आशय यह है किस जिस प्रकार ईश्वर की वायु, जल, प्रकाश सबके लिए उपलब्ध है, उसी प्रकार भोजन इत्यादि भी इनके लिए उपलब्ध होने चाहिए। भोजन एवं वस्त्रादि को अन्य व्यक्तियों के शोषण का साधन बनाना अनुचित एवं अन्यायपूर्ण है। इससे हिंसा एवं रक्तपात की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। अत: धनी व्यक्ति को अपनी अर्जित अतिरिक्त संम्पत्ति के अनावश्यक उपयोग का नैतिक आधार नहीं है।

उल्लेखनीय है कि साम्यवाद बल प्रयोग एवं हिंसात्मक कार्यवाही के माध्यम से पूँजीपतियों का विनाश कर उनकी सम्पत्ति का सामाजिक हित में उपयोग करने की बात करता है।

पूँजीवाद उत्पादन एवं उपयोग पर पूँजीपति के स्वतंत्र स्वामित्व को स्वीकार करता है, जबकि महात्मा गाँधी आर्थिक समानता की स्थापना हेतु पूँजीवाद एवं मार्क्सवाद के भावनात्मक पक्षों को स्वीकार करते हैं।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

महात्मा गाँधी उत्पादन के दृष्टिकोण से पूँजीवाद एवं वितरण के दृष्टिकोण से समाजवाद की बात करते हैं।

✦ **<u>लघु एवं कुटीर उद्योग पर गाँधी के विचार</u>**

महात्मा गाँधी भारतीय संदर्भ में जहाँ श्रम की प्रचुरता है वहाँ लघु एवं कुटीर उद्योग का समर्थन करते है। इससे सभी व्यक्ति स्वालंबी बनकर भौतिक एवं व्यक्तिगत उत्थान सुनिश्चित कर सकते हैं।

महात्मा गाँधी का कहना है कि व्यापक मशीनीकरण के कई नाकारात्मक परिणाम है-

☞ व्यापक मशीनीकरण–वृहद उत्पादन→ खपत के लिए बाजार→ उपभोक्तावादी प्रवृत्ति→ साम्राज्यवादी प्रवृत्ति का उदय→ उपनिवेश की प्रवृत्ति का उदय

☞ व्यापक मशीनीकरण- वृद्ध उत्पादन→ केन्द्रीयकरण →शोषण, असमानता एवं विद्धेष को बढ़ाना।

☞ व्यापक मशीनीकरण→ श्रम की महत्ता घटेगी→ बेरोजगारी बढ़ेगी।

☞ व्यापक मशीनीकरण→ मशीनों के साथ-साथ काम करते-करते संवेदनाओं की कमी→ यंत्रवत व्यवहार→ नैतिकता एवं आध्यात्मिकता में बाधा।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि कार्ल-मार्क्स और जवाहर लाल नेहरू ने मनुष्य की आश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यापक मशीनीकरण एवं वृहत उत्पादन का समर्थन करते हैं, वही गाँधी का कहना है कि हमतें अपनी आवश्यकता को कम करना चाहिए।

महात्मा गाँधी का यह कथन प्रसिद्ध है कि- ''प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति तो कर सकती है किन्तु किसी एक व्यक्ति के लोभ को पूरा नहीं कर सकती है।''

✦ **<u>सामाजिक आयाम</u>**

महात्मा गाँधी सामाजिक क्षेत्र में अस्पृश्यता का अंत, सामाजिक एकता और न्याय की स्थापना, बुनियादि शिक्षा के विस्तार पर बल देते हैं। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य शरीर, मस्तिष्क और आत्मा का समन्वित एवं सर्वांगीण विकास करना है। गाँधी बुनियादी शिक्षा में पढ़ाई के साथ-साथ सामानापयोगी कार्यों को भी जोड़ना चाहते थे।

✦ **<u>गाँधी का वर्ण व्यवस्था संबंधी विचार</u>**

महात्मा गाँधी वर्ण व्यवस्था को हिन्दू धर्म का अनिवार्य अंग मानते है। वे इसे 'धर्म आविष्कार' 'सत्य की निरंतर का परिणाम' मानते हैं।

गाँधी के अनुसार वर्ण व्यवस्था का आशय व्यवसाय मूलक विभाजन पर आधारित संगठन से है। 'हरिजन' में गाँधी यह कहते हैं कि 'वर्ण धर्म का अर्थ है- हर एक को कर्तव्य के रूप में अपने पुरखों के अनुवांशिक व्यवसाय को वहाँ तक निर्वाह करना चाहिए, जहाँ तक वह आधारभूत नैतिकता के विरुद्ध न हो।

गाँधी के सामाजिक विचारों का आधार समानता है। इनके अनुसार सभी व्यक्ति समान है। अत: जाति, धर्म, व्यवसाय आदि के आधार पर समाज में जो असमानता, ऊँच-नीच, उत्कृष्ट-निकृष्ट आदि का भाव निर्मित किया गया है, वह कृत्रिम है। मनुष्य की अपनी इच्छापूर्ति या स्वाथपूर्ति का साधन है। आदर्श समाज की स्थापना तभी हो सकती है, जब ऊँच-नीच का यह भाव समाप्त हो।

सामाजिक संदर्भ में महात्मा गाँधी यद्यपि जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था के समर्थक है, परन्तु वे जाति व्यवस्था, अस्पृश्यता आदि के विरोधी है। गाँधी वर्ण व्यवस्था को केवल व्यक्ति के आर्थिक जीवन व आजीविका प्राप्ति से संबंधित करते है जिसमें ऊँच-नीच का स्थान नहीं है।

महात्मा गाँधी के वर्ण व्यवस्था में तीन बातें सम्मिलित है-

1. सभी कार्यों या व्यवसायों में समानता होनी चाहिए। इसमें श्रेष्ठता निम्नता का भाव नहीं होना चाहिए। इस संदर्भ में धर्मों द्वारा बताए गए श्रेणीगत पदानुक्रम को स्वीकार नहीं किया जा सकता है।
2. वंशानुगत कार्य परंपरागत व्यवसाय को व्यक्ति द्वारा अपनी आजीविका का साधन व समाज के प्रति अपने कर्तव्य का पालन समझ कर करना चाहिए। दूसरे शब्दों में व्यक्ति को स्वधर्म का पालन निष्ठा के साथ

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

करना चाहिए।

3. समाज में इस विचार का पालन करने के लिए विभिन्न कार्यों व व्यक्तियों से प्राप्त होने वाले लाभों में अधिकाधिक समानता होना चाहिए ताकि उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी न आए। स्पष्टत: वर्ण व्यवस्था की अवधारणा में कीमत एवं प्रतिष्ठा के संबंध में समरूपता पर जोर दिया गया है।

✦ **महात्मा गाँधी निम्नलिखित कारणों से वर्ण व्यवस्था का समर्थन करते हैं।**

1. जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था से वंशानुगत व्यवसाय को परिष्कृत करने में आसानी होगी। पिता द्वारा प्राप्त अनुभव व योग्यता को प्राप्त कर पुत्र जीवन में सरलता से अग्रसारिता हो सकता है।
2. मनुष्य द्वारा अपने पैतृक कार्य त्यागने पर अव्यवस्था उत्पन्न हो जाएगी। इससे समाज में किसी कार्य विशेष के लिए प्रतियोगिता व संघर्ष उत्पन्न हो सकता है।
3. वर्ण व्यवस्था से सामाजिक संतुलन की स्थापना में मदद मिलती है। यह हिन्दू धर्म की आंगिक एकता को इंगित करता है।

☞ महात्मा गाँधी के अनुसार वर्ण व्यवस्था में विकृति का कारण कुछ पेशों तथा व्यवसायों को भिन्न मानकर तथा कुछ को उचित मानकर जातिगत विशेषताओं को उसमें स्थापित करना है। स्पष्टत: जब वर्ण व्यवस्था में ऊँच नीच का भाव आता है तो फिर जाति भेद का रास्ता प्रशस्त होने लगता है। यह जाति भेद वर्ण-व्यवस्था में विकृत का परिणाम है।

☞ महात्मा गाँधी के अनुसार वर्ण व्यवस्था का सिद्धांत जाति का सिद्धांत नहीं है क्योंकि वर्ण सिद्धांत नैतिक है, जबकि जाति सिद्धांत अनैतिक । वर्ण सिद्धांत का विभाजन श्रम आधारित है, जबकि जाति व्यवस्था कृत्रिम।

☞ वर्ण चार है, जातियाँ अनेक है। जातियों में ऊँच नीच, उत्कृष्टता-निकृष्टता का भाव विद्यमान रहने के कारण अस्पृश्यता को बढ़ावा मिलता है। सर्वोदयी समाज की रचना के लिए इसका उन्मूलन आवश्यक है।

✦ **<u>निदान का उपाय</u>**

परंपरागत हिन्दू समाज की संरचना में सुधार किया जाय, उसमें आई विकृति को दूर किया जाए। इसके लिए गाँधी निम्नलिखित उपाय करते हुए नजर आते हैं-

☞ सवर्णों का हृदय परिवर्तन, मंदिर प्रवेश

☞ हरिजन का नाम देना- मनोवैज्ञानिक समर्थन, हरिजन सवेक संघ की स्थापना।

☞ **कथन** - ''अगर मेरा पुनर्जन्म हो तो शुद्र के रूप में ताकि मैं उनका पूर्ण सुधार कर सकूँ। अगर नहीं हुआ तो हिन्दू धर्म नष्ट हो जाएगा।

☞ गाँधी शुद्रों के रहन-सहन के ढंग में सकारात्मक परिवर्तन चाहते हैं। इनके अनुसार वे मांस भक्षण, मदिरापान इत्यादि निकृष्ट कोटि के कार्यों से दूर रहें।

✦ **<u>राजनैतिक आयाम</u>**

राज्य के विषय में महात्मा गाँधी के विचार अहिंसक अराजकतावादियों एवं टालस्टॉय से मिलते हैं। महात्मा गाँधी के अनुसार राज्य हिंसा एवं पाश्विक शक्ति पर आधारित होता है। उनके अनुसार आधुनिक राज्य आत्मा के विकास में बाधक हैं। राज्य बाह्य नियंत्रण एवं प्रतिबंध का प्रतीक है। राज्य पुलिस बल, सैन्य एवं अदालती ताकतों के माध्यम से अपनी बातों को नागरिकों पर थोपता हैं, जिससे मनुष्यों की स्वतंत्रता पर प्रहार एवं व्यक्तिगत विकास में बाधा पहुँचती है, इसके परिणामस्वरूप नागरिकों का स्वतंत्र, नैतिक एवं आत्मिक विकास नहीं हो पाता, उसमें आत्मविश्वास, स्वावलंवन, ईमानदारी आदि गुण स्वाभाविक रूप से विकसित नहीं हो पाते।

महात्मा गाँधी के शब्दों में- ''राज्य केन्द्रित एवं संगठित रूप से हिंसा का प्रतिनिधित्व करता है। व्यक्ति एक सचेतन आत्मबल प्राणी है, किन्तु राज्य एक ऐसा आत्महीन यंत्र है, जिससे हिंसा से नहीं बचाया जा सकता, क्योंकि इसकी उपस्थिति ही हिंसा से हुई है।''

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इसलिए महात्मा गाँधी थोरो के इस विचार का समर्थन करते हैं-''सर्वोत्तम सरकार वह है जो सबसे कम शासन करती है।''

महात्मा गाँधी सर्वोदय के चरम आदर्श के रूप में राज्यविहीन शासन की बात करते हैं। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का शासक इसकी आत्मा होती है। इस प्रकार सर्वोदय अपने विचारों के साथ व्यावहारिक स्तर पर व्यक्तिवादी दर्शन हो जाता है और आदर्श के दृष्टिकोण से अराजकतावाद को स्वीकार करता है। परन्तु गाँधी वर्तमान परिस्थितियें में राज्य के उन्मूलन के पक्षधर नहीं है, क्योंकि मानव जीवन अभी इतना पूर्ण और नैतिक रूप से विकसित नहीं हो पाया है कि वह स्वयं संचालित हो। अत: वे वर्तमान परिस्थितियों में राज्य के अतिस्तत्व की बात तो करते हैं, किन्तु वे इस संदर्भ में तीन सुझाव देते हैं।

1. **सत्ता का विकेन्द्रीकरण :**–महात्मा गाँधी सत्ता के विकेन्द्रीकरण पर बल देते हैं। गाँधी का मानना है कि केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति से न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता बाधित होती है, बल्कि असमानता शोषण एवं अन्याय को बढ़ावा मिलता है। वे स्वराज्य की बात करते हैं यहाँ स्वराज्य का अर्थ है- सभी प्रकार की पराधीनता से मुक्ति है। इसमें सरकार के नियंत्रण से मुक्त होने के प्रयास का भाव निहित है, चाहे वह सरकार विदेशी हो या स्वदेशी हो।

स्वराज्य का आशय है–आत्मशासन एवं आत्म नियंत्रण का आशय है-आत्मशासन एवं आत्म नियंत्रण राजनैतिक क्षेत्र में इसका अभिप्राय है कि ग्राम पंचायतों को अपनी गाँवों को प्रशासन एवं प्रबंधन का समस्त अधिकार मिले। इसमें राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से स्वालंबी गाँव की भावना निहित है। इस रूप में गाँधी स्वतंत्र, आत्मर्भिर ग्राम स्वराज्य की स्थापना की बात करते हैं।

2. **राज्य का कार्य क्षेत्र न्यूनतम हो**–गाँधी के अनुसार वही सरकार सर्वोत्तम है जो कम शासन करे। राज्य को यक्ति के नैतिक उत्थान के लिए समुचित वातावरण तैयार करना चाहिए ताकि व्यक्ति के व्यक्तित्व समयक रूपेण विकास हो सके।
3. **राज्य की प्रमुखता का खंडन**–गाँधी राज्य की प्रमुखता का खंडन करते हैं। उनके अनुसार राज्य साध न रूप में हो साध्य रूप में नहीं ।

वे हिगल, हिटलर और मुसोलिनी की इस मान्यता को स्वीकार नहीं करते थे कि राज्य अपने आप में एक साध्य है इनके अनुसार राज्य एक साधन है तथा व्यक्ति और समाज का नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास साध्य है।

✦ **<u>राम राज्य या धर्म राज्य</u>**

गाँधी का आदर्श राम राज्य है। राम राज्य किसी धर्म विशेष का राज्य नहीं है। राम राज्य आदर्श सामाजिक स्थिति या पवित्र व्यवस्था को इंगित करता है, जहाँ व्यक्ति की अंतरात्मा ब्रह्म नियंत्रणों से पूर्णत: मुक्त होती है। यह आत्मा का शासन है, धर्म का राज्य अथवा न्याय और प्रेम का राज्य है। यह सही अर्थों में धरती पर ईश्वरीय राज्य है, इसमें कोई दुर्गुण नही है।

गाँधी मतानुसार राम राज्य ऐसी स्थिति होगी जिसमें व्यक्ति नैतिकता एवं अपनी अंतरात्मा के अनुसार सदैव सद् आचरण करेगा। इसके लिए कोई बाह्य बल या न्याय प्रणाली की आवश्यकता नहीं होगी।

गाँधी के रामराज्य की कल्पना थी कि ऐसा राज्य जहाँ नैतिकता पर आधारित जनता की संप्रभुता हो, जहाँ प्रत्येक अपना कर्तव्य समझता हो और इसका पालन करता हो, टॉलस्टॉय ने इसे ही पृथ्वी पर परमेश्वर का राज्य कहा था। यह आदर्श समाज पूर्णत: अहिंसक एवं शांतिमय होगा।

✦ **<u>आर्थिक आयाम</u>**

महात्मा गाँधी मूलत: एक आध्यत्मिक विचारक है। धर्म के संबंध में उनका विचार नैतिक मूल्यपरक एवं मानवतावादी है, परन्तु वह धार्मिक रूढ़िवादित, धार्मिक कट्टरता एवं धर्मान्धता के विरोधी है। साथ ही वे धर्म के वह ब्रह्म ढाँचागत पक्ष या कर्मकांडीय पक्ष को विशेष महत्त्व नहीं देते थे। उनके अनुसार धर्म मानव जीवन और समाज का आधारभूत तत्व है। धर्म के संदर्भ में अपने विचार को स्पष्ट करते हुए गाँधी कहते हैं कि धर्म से मेरा अभिप्राय औपचारिक या रूढ़िगत धर्म से नहीं है बल्कि उस धर्म से जो सभी

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

धर्मों के बुनियाद है। धर्म का अर्थ पंथ या संप्रदाय नहीं है बल्कि सभी धर्मों में अंतनिर्हित मूल शाश्वत तत्व (दया, करुणा, प्रेम) से है, जो कि समस्त मानव के कल्याण का हेतु है।

महात्मा गाँधी का यह मानना है कि सभी प्रमुख धर्म कुछ सामान मूलभूत विचारों पर आधारित है, अर्थात् आंतरिक दृष्टि से सभी धर्मों से समान भाव है अर्थात्, सभी धर्मों में समान भाव है अर्थात् सभी धर्मों के मूलत्व (दया, प्रेम, कल्याण, त्याग आदि) एकसामन है। धर्मों का महत्व इन आधारभूत नैतिक मूल्यों संदर्भ में ही हैं। इसी रूप में वह 'सर्वधर्म समभाव' की अवधारणा को स्वीकार करते हैं। इस अवधारणा में सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव समाहित है।

✦ **सर्वधर्म समभाव**

विभिन्न धर्मों के मध्य सामंजस्य एवं सौहार्द्र स्थापित करने तथा परस्पर वैमनस्य एवं सांप्रदायिकता की समस्या के समाधान के संबंध में एक उपाय यह हो सकता है कि हम अपने धर्म के साथ-साथ दूसरों के धर्मों का भी समान आदर करें। सन्य, अहिंसा एवं उदारता पर आधारित इस विचारधारा को महात्मा गाँधी ने 'सर्वधर्म समभाव' की संज्ञा दी है। गाँधी द्वारा उल्लिखित एकादश वतों में सर्वधर्म समभाव को एक अनिवार्य व्रत के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसका निष्ठापूर्ण पालन करना मनुष्यों के लिए अनिवार्य हैं।

''धार्मिक सहिष्णुता'' में दूसरे के धर्मों को अच्छा न समझने पर भी उन्हें सहन करने का भाव विद्यमान है जबकि वास्तव में होना यह चाहिए कि हम सभी धर्मों को समान रूप से महत्वपूर्ण मानें, तभी उनके प्रति आदर भाव आयेगा। इसीलिए महात्मा गाँधी सर्वधर्म समभाव को प्रस्तुत करते हैं।

गाँधी धर्मांतरण का विरोध करते हैं धर्म परिवर्तन न नैतिक रूप से ठीक है और न ही आध्यात्मिक रूप से उपयुक्त है। उनके अनुसार जब सभी धर्मों में समान भाव है तो फिर एक धर्म छोड़कर दूसरे धर्म में प्रवेश निरर्थक है। सर्वधर्म समभाव की आवधारणा में इसका समर्थन है कि-

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित दुःख भाग्यवेत ।।

✦ **धर्म और राजनीति**

महात्मा गाँधी के अनुसार चूँकि धर्म मानव धर्म का आधार है, अतः समस्त मानवीय गतिविधियाँ धर्म से प्रभावित है, तथा इसमें राजनीति भी सम्मिलित है। अतः धर्म से राजनीति को पृथक करने का प्रयास अर्थहीन है। राजनीतिक गतिविधियों का आधार धर्म ही होना चाहिए। जब महात्मा गाँधी धर्म को राजनीति का आधार बनाने का बात करते हैं तो इसका तात्पर्य किसी पंथ या संप्रदाय को राजनैतिक आधार बनाने से नहीं है बल्कि मानवजाति के उच्चतम मूल्यों एवं कर्तव्यों को आधार बनना था।

धर्मविहीन राजनीति नीतिविहीन या नीति शून्य राजनीति होगी जो त्याज्य है निंदनीय है। चूँकि धर्म व्यक्ति और समाज कल्याण का साधन है, अतः राजनीति धर्मविहीन नहीं हो सकती, क्योंकि राजनीति का लक्ष्य भी व्यक्ति और समाज की हितों की रक्षा करना, उसमें वृद्धि करना है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि यद्यपि महात्मा गाँधी राजनीति को धर्म आधारित मानते हैं, परन्तु वे धर्मतंत्र या पंथ राजनीति के विरोधी है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

Q. बिहार में किसान आंदोलन पर टिप्पणी करें।

Sol. **बिहार में किसान आंदोलन**

औपनिवेशिक शासन की नवीन भू-राजस्व नीति तथा उसके समर्थक स्थानीय जमींदारों के शोषण ने किसानों में विरोध का भाव उत्पन्न किया और यह विरोध संगठित रूप महात्मा गाँधी के चंपारण आंदोलन से प्रारंभ होकर स्वामी सहजानंद सरस्वती के बिहार किसान सभा से आगे बढ़ते हुए बकाश्त आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्रता के बाद जमींदारी प्रथा के उन्मूलन तक जारी रहा।

✦ **बिहार में किसान आंदोलन का विकासात्मक चरण**

चंपारण सत्याग्रह ⟶ मधुबनी किसान घटनाक्रम

⟶ स्वामी सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में किसान सभा का गठन

✦ **चंपारण सत्याग्रह**

बिहार में किसान आंदोलन की प्रथम सशक्त व संगठित प्रारंभ वर्ष 1917 के चंपारण सत्याग्रह से हुई । चंपारण क्षेत्र में यूरोपीय बागान मालिक किसानों से अनुबंध के तहत जबरन नील खेती करने को बाध्य करते थे। जिसके अंतर्गत किसानों को अपने भूमि के 3/20 हिस्से पर नील की खेती करना अनिवार्य था।

☞ **तीनकठिया प्रणाली** के नाम से ज्ञात यह पद्धति किसानों के प्रतिकूल थी। इससे चंपारण के किसानों में रोष व्याप्त था।

फलस्वरूप चंपारण क्षेत्र के किसानो ने स्थानीय किसान राजकुमार शुक्ल की अगुवाई में महात्मा गाँधी से आंदोलन करने का नेतृत्व करने का अनुरोध किया।

अप्रैल, 1917 में महात्मा गाँधी ने चम्पारण से भारत में अपना प्रथम सत्याग्रह आरंभ किया। परिणामस्वरूप सरकार ने विवश होकर चंपारण के किसानों की समस्याओं की जांच हेतु एक आयोग का गठन किया जिसकी अनुशंसा के आधार पर सरकार ने तीनकठिया प्रणाली समाप्त कर दी तथा बागान मालिकों को निर्देश दिया कि वे अवैध वसूली का 25% किसानों को लौटा दे।

चंपारण में सत्याग्रह के सफल प्रयोग से किसानों में उत्साह उत्साह का संचार किया, जिससे बिहार के अन्य क्षेत्रों में किसानों ने भी अपने शोषण से मुक्ति हेतु सत्याग्रह व अहिंसात्मक साधनों को अपनाने लगे। चंपारण सत्याग्रह भारत में अन्य विद्रोहों सत्याग्रहों की तरह किसान आंदोलनों के लिए प्रस्थान बिंदु का कार्य किया। उत्तरोत्तर किसान आंदोलन मुख्यत: अनावश्यक कर में वृद्धि, किसानों की दयनीय स्थिति, महाजनी जमींदारी शोषण, औपनिवेशिक नीति इत्यादि के विरुद्ध किसानों का संरक्षण करने का प्रयास था।

✦ **मधुबनी किसान घटनाक्रम**

वर्ष 1919-20 के दौरान उत्तरी बिहार के किसानों में असंतोष व्याप्त था। इसी क्रम में जून 1919 में किसान नेता विधानदे के नेतृत्व में मधुबनी जिला के किसानों ने लगान वसूली में कर्मचारियों के अत्याचार इत्यादि के लिए अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु दरभंगा राज के विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ किया। इस आंदोलन में भी गांधीवादी रणनीतियों का प्रयोग किया। यह आंदोलन शीघ्र ही अन्य क्षेत्रों जैसे सुपौल, भागलपुर, पूर्णिया, मधेपुरा में प्रसारित हो गया।

परिणामस्वरूप वर्ष 1922 में दरभंगा महाराज द्वारा एक प्रांतीय सभा का गठन तथा किसानों को कुछ क्षेत्रों में स्वीकृत कर लिया गया।

✦ **किसान सभा का गठन**

किसान आंदोलन को संस्थागत करने का प्रयास आरंभ किया गया। वर्ष 1922-23 में मुंगेर में शाह मुहम्मद जुबैर की अध्यक्षता में श्री कृष्ण सिंह एंव अन्य सहयोगियों ने मिलकर किसान सभा का गठन किया।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

✦ **बिहार किसान आंदोलन में सहजानंद सरस्वती का योगदान [65th BPSC (मुख्य परीक्षा), 2020]**

भारत में संगठित किसान आंदोलन की स्थापना का श्रेय स्वामी सहजानंद सरस्वती को जाता है। इन्होनें किसानों को दासता से मुक्ति, महाजनी जमींदारी शोषण का प्रतिकार, औपनिवेशिक नीति के विरुद्ध संगठित एंव रणनीतिक आंदोलन इन्होनें रोटी को ही भगवान कहा और किसानों को भगवान से बढ़कर बताया।

1929- सोनपुर मेला – प्रांतीय किसान सभा का औपचारिक गठन

अध्यक्ष– सहजानंद सरस्वती, उपाध्यक्ष - श्री कृष्ण सिंह - 1929 में इस सभा की गतिविधियाँ बड़े पैमाने पर प्रारंभ हुई। इस मंच से उन्होने किसानों के कारुणिक एवं दयनीय स्थिति के प्रश्न को उचित ठहराया ।

उद्देश्य– जमींदारों को शोषण से मुक्ति दिलाने तथा किसानों के जमीन पर मलिकाना देने का मांग बिहार में कई जगहों जैसे मुजफ्फरपुर, गया, हाजीपुर इत्यादि जगहों पर किसानों की सभा का आयोजन किया गया। पटना, भागलपुर, सारण, गया इत्यादि जगहों पर किसान नेताओं द्वारा प्रदर्शन किया गया।

किसान नेताओं ने सहजानंद सरस्वती के नेतृत्व में नहर शुल्क में कमी, कर्मचारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार को रोकने तथा मालगुजारी को कम करने की मांग की।

सहजानंद सरस्वती ने किसानों को हक दिलाने के लिए संघर्ष को ही जीवन का प्रधान लक्ष्य बनाया। उन्होंने नारा दिया- कैसे लोगे मालगु जारी, लर हमारा जिंदाबाद। बाद में यहीं नारा किसान आंदोलन का सबसे प्रिय नारा बन गया अप्रैल 1936 में कांग्रेस के लखनऊ सम्मेलन में अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना हुई और स्वामी सहजानंद सरस्वती को उसका अध्यक्ष चुना गया। एम. जी. रंगा, पंडित कार्या - नंद शर्मा, आचार्य नरेंद्र देव, राहुल सांकृत्यायन, राम मनोहर लोहिया, जय प्रकाश नारायण जैसे कुशल व्यक्तित्व किसान सभा से जुड़े थे। किसान सभा ने उसी वर्ष किसान घोषणा पत्र जारी किया कर जमींदारी प्रथा के समग्र उन्मूलन और किसानों के सभी तरह के ऋण माफ करने की मांग उठाई जमींदारी उन्मूलन का प्रस्ताव 1935 ई. में किसान सभा द्वारा पारित किया जा चुका था। बिहार में किसानों की अन्य मांगे थी कानूनी वसूलियों एवं काश्तकारों की बेदखली का अंत था तथा बकाश्त भूमि की वापसी ।

उन्हीं के प्रेरणा से गया में यदुनंदन शर्मा तथा 1937 के बड़हिया राल में बकारत भूमि की वापसी के लिए कार्यानंद शर्मा के नेतृत्व में आंदोलन किया। गया।

स्वामी सहजानंद सरस्वती संघर्ष के साथ ही सृजन के प्रतीक पुरुष है। सामाजिक व्यवस्था पर जहाँ उन्होंने भूमिहार ब्राह्मण परिचय, झूठा भरा मिथ्या, अभिमान जैसी पुस्तकें हिंदी में लिखी वही आजादी की लड़ाई और किसान आंदोलन के संघर्ष की यात्रा वृतांत उनकी किसान सभा के संस्मरण, महारुद्र का महातांडव, जंग और राष्ट्रीय आजादी, गया जिलें में सवा मास आदि पुस्तकों में दर्ज हैं।

ध्यात्वय है स्वामी सहजानंद सरस्वती के द्वारा किए गए आंदोलनों की प्रासंगिकता आज के दौर में भी विद्यमान है, जहाँ भी सरकारी कानूनों एवं नीतियों की वजह से किसानों की यथास्थिति प्रभावित हुई हैं, परिणामस्वरूप संकुचित एवं समायोजित आंदोलन किया गया है।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. बिहार में चंपारण सत्याग्रह (1917) के कारणों, परिणाम एवं महत्व को दर्शाइए।

Sol. चम्पारण सत्याग्रह राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के स्वर्णिम इतिहास में प्रस्थान बिन्दु का कार्य करता है। यह सत्याग्रह औपनिवेशिक सत्ता के कुरीतियों एवं किसानों की गुलामी मानसिकता के विरुद्ध महात्मा गाँधी के नेतृत्व में वर्ष 1917 में किया गया प्रथम सफल सत्याग्रह था जिसकी आधारशिला बिहार के चम्पारण में रखी गई थी।

पृष्ठभूमि

चम्पारण में गोरे बगान मालिकों की दमनकारी नीति ने किसानों को मजबूर किया गया, जबरन नील की खेती करने जिसमें जमीन के 20 कट्टे में 3 कट्टे पर नील की खेती अनिवार्य कर दी गई जिसे तीनकठिया पद्धति के नाम से जाना जाता है।

औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप जर्मनी द्वारा कृत्रिम नील रंगो का अविष्कार किया गया, फलस्वरूप वैश्विक बाजार में चम्पारण के प्राकृतिक नील की माँग कम हो गई। इससे गोरे मकान मालिकों ने कर में वृद्धि कर दी और जबरन नीलहें किसानों से जमीन पर नील की खेती करवाने लगे। नील की खेती को लेकर 1859-60 में बंगाल के नदिया क्षेत्र में दिगम्बर विश्वास व विष्णु विश्वास के नेतृत्व में नील आंदोलन हो चुका था जिसका उल्लेख दीनबंधु मित्र द्वारा रचित 'नील दर्पण' में किया गया है।

☞ **चम्पारण सत्याग्रह और लखनऊ अधिवेशनः**- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन 1916 50 में लखनऊ में संपन्न हुआ । इस अधिवेशन में बिहार के प्रतिनिधित्व ब्रजकिशोर प्रसाद और राजकुमार शुक्ल और अन्य किसान पहुँचे थे । ब्रजकिशोर प्रसाद ने चम्पारण के किसानों की समस्या का प्रस्ताव रखें। इसी अधिवेशन में महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रहों से प्रभावित राजकुमार शुक्ल ने महात्मा गाँधी को चम्पारण में किसानों पर हुए अत्याचार से अवगत कराया और चम्पारण आने का आग्रह किये।

✦ **महात्मा गाँधी का चम्पारण आगमन**

10 अप्रैल 1917 को महात्मा गाँधी पटना पहुँचे फिर मुजफ्फरपुर जहाँ उनकी मुलाकात जे० बी० कृपलानी से हुई और तत्पश्चात् राजेन्द्र प्रसाद से मिले और चम्पारण प्रस्थान कर गए।

15 अप्रैल 1917 को महात्मा गाँधी अपने समर्थकों राजेन्द्र प्रसाद, ब्रज किशोर प्रसाद, मजहरूल हक, नरहरि पारिख, अनुग्रह नारायण सिन्हा, महादेव देसाई आदि के साथ चम्पारण पहुँचे। इसी बीच बिहार प्लान्टर्स एसोसिएशन के अंग्रेज अधिकारियों ने महात्मा गाँधी सहित समर्थकों को चंपारण सीमा में प्रवेश से रोका गया और वापस लौट जाने को कहा । परंतु महात्मा गाँधी ने उनका यह अनुरोध मानने से इंकार कर दिया और किसी प्रकार के दण्ड भुगतने को तैयार हो गये एवं वही आमरण अनशन प्रारंभ कर दिया। फलस्वरूप सत्याग्रह की इस प्रक्रिया ने समर्थकों सहित महात्मा गाँधी को चम्पारण में सशर्त प्रवेश करने की अनुमति मिली।

✦ **चम्पारण कृषि समिति का गठन**

ब्रिटिश सरकार द्वारा एफ. जी. स्लाई की अध्यक्षता में चम्पारण कृषि समिति का गठन किया गया, जिसमें महात्मा गाँधी को शामिल होने का निमंत्रण दिया गया, जिसे इन्होनें सशर्त स्वीकार किया। इसके पूर्व महात्मा गाँधी एवं अपने समर्थकों सहित गाँवो में जाकर किसानों से प्रत्यक्ष रूप से बातचीत करते तथा उनके समस्याओं को दर्ज करते थे। इसी आधार पर उनके शर्त निम्न हैं-

1. समिति में सम्मिलित होने के बाद भी वे अपने समर्थकों के साथ विचार-विमर्श कर सकते हैं।
2. किसानों, रैयतों की वकालत कर सकेगें ।
3. जाँच असंतोषजनक होने पर वे पुनः रैयतों, किसानों का पथ-प्रदर्शक करने के लिए स्वतंत्र होगे।

अंततः अक्टूबर 1917 को समर्थकों सहित महात्मा गाँधी के जाँच समीति के समझ अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। जो निम्न हैं-

(i) बढ़े हुए लगान का 1/4 हिस्सा वापस लिया जाए तथा 3/4 के का वसुली की जाय।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

(ii) तीनकठिया व्यवस्था समाप्त की जाए ।

(iii) जिन कृषकों से नगद राशि ली गई उनको 25% राशि वापस दी जाए।

मार्च 1918 तक चम्पारण कृषि बिल पर गवर्नर- जनरल द्वारा हस्ताक्षर कर दिया गया। इसके साथ ही तीनकठिया समेत कृषि संबंधी अन्य सभी अवैध कानून समाप्त कर दिये जाए।

✦ **महत्व**

चम्पारण सत्याग्रह के माध्यम से महात्मा गाँधी का राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में सशक्त प्रवेश हुआ। इस आंदोलन में प्रथम बार भारत में, महात्मा गाँधी द्वारा अहिंसा एवं सत्याग्रह जैसी नवीनतम तकनीकी विचारों का सफल प्रयोग किया गया। इस आंदोलन से प्रेरित होकर भविष्य में अनेक किसान आंदोलन शुरु किए गए जिनका नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर के नेताओं ने किया। जैसे- खेड़ा आंदोलन, अवध किसान आंदोलन। बिहार में मधुबनी किसान घटना क्रम विद्यानंद के नेतृत्व में मुंगेर में किसान सभा का गठन- शाह मोहम्मद जुबैर और श्री कृष्ण सिंह द्वारा।

☛ इस आंदोलन से कई राष्ट्रीय आंदोलनों के उद्देश्य मिला । (जैसे- असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन)

☛ इस सत्याग्रह में कई नेताओं, महिलाओं, आदिवासियों, किसानों आदि ने अपनी सहभागिता सुनिश्चित की जिससे इस आंदोलन को सफल बनाया।

☛ इस आंदोलन में प्रताप और बिहारी जैसे पत्र- पत्रिकाओं का योगदान उल्लेखनीय रहा।

चम्पारण सत्याग्रह की सफलता पर रविन्द्रनाथ टैगोर ने मोहन दास करमचन्द्र गाँधी को 'महात्मा' की उपाधि दिये।

✦ **मूल्यांकन**

महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित सत्य और अहिंसा पर आधारित सत्याग्रह की प्रासंगिकता वर्तमान दौर में बनी हुई है। ध्यातव्य है बहुत सारे राष्ट्र एवं उनसे जुड़े हुए सत्याग्रहियों ने सत्याग्रह प्रक्रिया के द्वारा औपनिवेशिक व्यवस्था में परिवर्तन तथा संसोधन लाया हैं। उदाहरणस्वरूप नेल्सन मंडेला और मार्टिन लूथर किंग जूनियर इत्यादि सत्याग्रहियों का नाम उल्लेखनीय है।

''महात्मा गाँधी द्वारा रचित सत्याग्रह एक आत्मबल प्रक्रिया है, जिससे विरोध का अंत होता है, विरोधी का नहीं।''

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. असहयोग आंदोलन और बिहार ।

Sol. असहयोग आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्रम के इतिहास में राष्ट्रीय स्तर पर किया गया प्रथम व्यापक जन आंदोलन था। 1915 के बाद स्वराज की माँग जोर पकड़ रही थी तथा इस राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने के लिए ब्रिटिशों ने अनेकों प्रयास किए, जिसमें सर्वाधिक कुख्यात 1919 ई. का रॉलेट एक्ट (यह ऐसा कानून था किसी को भी न्यायालय के समझ लाए बगैर गिरफ्तार किया जा सकता था।) नामक कानून बना, ऐसी विकट परिस्थिति में महात्मा गाँधी ने संपूर्ण देश का आह्वाहन करते हुए वर्ष 1920 ई. में असहयोग आंदोलन का शुभारंभ किया गया।

✦ **आंदोलन की परिस्थितियाँ एवं कारण**

रौलेट एक्ट कानून तथा इस कानून के प्रत्युत्तर में ब्रिटिश जनरल डायर द्वारा 13 अप्रैल 1919 को जालियांवाला बाग हत्याकांड मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों (1919 का भारत शासन अधिनियम) ने राज्यों में द्वैध शासन प्रणाली लागू किया, जिससे औपनिवेशिक सत्ता के प्रति असंतोष में वृद्धि हुई ।

प्रथम विश्व युद्ध में भारतीय मुसलमानों का सहयोग प्राप्त करने के लिए ब्रिटिशों ने तुर्की के प्रति उदार रखने का वादा किया था, लेकिन बाद में इससे पीछे हट गए। प्रथम विश्व युद्ध के बाद कामगार, मध्यम वर्ग आदि को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

✦ **असहयोग आंदोलन का प्रारंभ**

1920 में महात्मा गाँधी ने खिलाफत कमेटी को ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध अहिंसक आंदोलन शुरू करने को कहा तथा कांग्रेस पर भी पंजाब में हुएअत्याचार, स्वराज संबंधी चुनौतियों पर असहयोग आंदोलन प्रारंभ करने के लिए कहा।

निष्कर्षतः सितम्बर 1920 को कलकता के विशेष अधिवेशन में कांग्रेस द्वारा असहयोग आंदोलन को मंजूरी दी गई तथा दिसंबर 1920 को नागपुर अधिवेशन में इसकी आधिकारिक पुष्टि कर दी गई। महात्मा गाँधी ने उसके माध्यम से एक वर्ष के भीतर स्वराज प्राप्ति की बात कही।

✦ **असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम**

- राष्ट्रीय विद्यालयों तथा पंचायती अदालतों की स्थापना।
- अस्पृश्यता का अंत, हिंदू मुस्लिम एकता।
- स्वदेशी का प्रसार तथा चरखा के उपयोग में वृद्धि।
- खादी वस्त्रों का प्रचार- प्रसार, मद्यनिषेध कार्यक्रम इत्यादि।
- सरकारी उपाधि, प्रशस्ति पत्रों को लौटाना।
- सरकारी विद्यालयों, महाविद्यालयों, अदालतों, विदेशी कपड़ो आदि का बहिष्कार।
- विधान परिषदों का बहिष्कार।
- सरकारी उत्सवों, समारोहों का बहिष्कार।
- अवैतनिक पदों से तथा स्थानीय निकायों के नामांकित पदों से त्यागपत्र।
- दमनकारी कानूनों की अवज्ञा।

✦ **असहोरान आंदोलन की प्रगति**

छात्रों, बुद्धिजीवियों ने चरखा कार्यक्रम पर विशेष बल दिया गया।

न्यायालयों के बहिष्कार में सी. आर. दास, मोती लाला नेहरू, चक्रवर्ती राजगोपालाचारी इत्यादि ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

विदेशी कपड़ो के बहिष्कार कार्यक्रम सर्वाधिक सफल रहा। ताड़ी एवं मदिरा की दुकानों पर धरने देने का कार्यक्रम अत्यधिक लोकप्रिय रहा।

महात्मा गाँधी द्वारा दी गई समय सीमा पूरा होने से पहले ही उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित चौरा-चौरी नामक स्थान पर 5 फरवरी 1922 ई० को एक भयानक घटना घट गई। इस घटना के अंतर्गत क्रोधित भीड़ ने पुलिस के 23 जवानों को थाने के अंदर जिंदा जला दिया, इससे आहत होकर महात्मा

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

गाँधी ने आंदोलन को वापस लेने का निर्णय लिया।

परिणामस्वरूप 12 फरवरी 1922 को बारदोली में हुई कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक ने असहयोग आंदोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया और आंदोलन को स्थगित कर दिया।

✦ **असहयोग आंदोलन और बिहार**

इस आंदोलन से जुड़े व्यक्तियों में मजहरूल हक, राजेंद्र प्रसाद, प्रमुख थे- मजहरूल हक, ब्रजकिशोर और मोहम्मद शफी इत्यादि साहित्यकार राहुल सांकृत्यायन असहयोग आंदोलन के दौरान छपरा में सक्रिय थे। मजहरूल हक ने पटना में सदाकत आश्रम स्थापित किया, यहां से छात्रों द्वारा चरखा बनाने का काम शुरु किया।

दिसंबर 1920 में महात्मा गाँधी के अल्पकालिक यात्रा के दौरान कई राष्ट्रीय विद्यालय खोले जाए तथा बिहार में एक विद्यापीठ के गठन का निर्णय लिया गया।

राष्ट्रीय महाविद्यालय के प्रांगण में बिहार विद्यापीठ का शुभारंभ फरवरी 1921 को किया गया। मजहरुल हक कुलस्थिति तथा ब्रजकिशोर प्रसाद कुलपति बनें।

30 सितंबर 1921 को मजहरूल हक ने सदाकत आश्रम से ''दि मदरलैंड'' नामक अखबार निकालना प्रारंभ किया जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय भावना का प्रसार, असहयोग कार्यक्रम का प्रसार और हिन्दू-मुस्लिम एकता का उपदेश देना था।

इस आंदोलन का सबसे व्यापक प्रभाव मुजफ्फरपुर और शाहाबाद जिलों में देखा गया। पटना इसका मुख्य केंद्र था। इसके साथ ही गया, आरा, मुंगेर, किशनगंज, और पूर्णिया भी इससे प्रभावित हुआ ।

यद्यपि स्वराज के लक्ष्य को लेकर चला यह आंदोलन लक्ष्य पाने के पूर्व ही स्थगित कर दिया गया तथापि इस आंदोलन ने यह प्रदर्शित किया है कि देश भर के भारतियों में राजनैतिक चेतना का विस्तार हुआ है तथा व्यापक समर्थन साबित हुआ। इस आंदोलन में समाज के सभी वर्गों यथा किसान, मजदूर, दस्तकार, व्यापारी, महिला इत्यादि ने भाग लिया था। स्पष्टत: कहा जा सकता है इस आंदोलन से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम की प्रगति में सामाजिक आधार का विस्तार हुआ तथा यह भविष्य में होने वाले अन्य आंदोलनों की रूपरेखा को स्पष्ट, व्यापक एवं निर्णायक किया।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. सविनय अवज्ञा आंदोलन और बिहार

Sol. असहयोग आंदोलन के उपरांत औपनिवेशिक सरकार की कुनीतियों कारवाईयों से क्षुब्ध भारतीयों जन मानसों द्वारा महात्मा गाँधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन का शुभारंभ किया गया, जहाँ सविनय अवज्ञा का अर्थ है सरकार द्वारा बनाए गए उन कानूनों का सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं बहिष्कार के माध्यम से विरोध करना है, जो नैतिक एवं मानवीयपूर्ण नहीं है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में उल्लेखनीय एवं अविस्मरणीय स्थान रखने वाले इस आंदोलन की शुरुआत 12 मार्च 1930 को ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह (दांडी मार्च) की शुरुआत हुई।

✦ **<u>आंदोलन की पृष्ठभूमि</u>**

औपनिवेशिक विरोधी गतिविधियों में वैश्विक परिवर्तन के साथ तीव्रता से प्रसार, हुआ । उदाहरणस्वरुप - साइमन कमीशन विरोधी आंदोलन, साम्य वादियों के नेतृत्व में कामगारों द्वारा उग्र प्रदर्शन 1929 की वैश्विक आर्थिक मंदी एवं उससे उत्पन्न तनाव ।

वर्ष 1929 में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पारित किया गया तथा कहा गया औपनिवेशिक तथा ब्रिटिश शासक किसी भी समय स्थिति में न भगवान, न ही मनुष्य को स्वीकार्य हैं। इसी क्रम में 26 जनवरी 1930 को घोषणा की गई है।

महात्मा गाँधी ने इस आंदोलन के पूर्व तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन के समक्ष 11 सूत्रीय माँगे प्रस्तुत किया गया तथा कहा गया, यदि इन्हें अस्वीकार किया जाता है, तो व्यापक स्तर पर जन आंदोलन की अधारशिला रखी जाएगी।

✦ **<u>आंदोलन का प्रारंभ एवं विस्तार</u>**

महात्मा गाँधी ने अपने सहयोगियों के साथ 12 मार्च 1930 को प्रसिद्ध दांडी यात्रा से दांडी तक शुरुआत (साबरमती 240 किमी. की पैदल यात्रा) की तथा 6 अप्रैल 1930 को समुद्र तट पर अल्प मात्रा में नमक बनाकर नमक कानून का उल्लंघन किया। तत्पश्चात् विधिवत रूप से सविनय अवज्ञा आंदोलन का श्री गणेश किया गया।

सी. राजगोपालाचारी ने तमिलनाडु में त्रिचनाप नली से वेदारण्यम तक की पैदल यात्रा कर नमक कानून भंग किया।

मालाबार में के. कलप्पन ने कालीकर से पायन्नूर तल यात्रा कर नमक कानून भंग किया गया।

धरसना में सरोजिनी नायडु के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह किया गया।

✦ **<u>बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रारंभ, विस्तार एवं रूपरेखा :-</u>**

- प्रारंभ
- विस्तार
- पटना सत्याग्रह स्वदेशी सत्याग्रह
- महिलाओं का योगदान
- नंगा सत्याग्रह
- चौकीदारी कर विरोधी आंदोलन
- बेगूसराय गोलीकांड
- तारापूर गोलीकांड

✦ **<u>बिहार में सविनय आंदोलन का प्रारंभ एवं विस्तार</u>**

बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन सर्वप्रथम 15 अप्रैल को चंपारण और सारण जिलों में स्थानीय नमकीन मिट्टी से नमक बनाकर नमक कानून की भंग किया गया ।

चंपारण में इस आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किए गए प्रमुख नेता थे - विपिन बिहारी वर्मा, शिवधारी पांडे, गणेश प्रसाद साहू, रामदयाल साहू, रामदास प्रसाद, हरवंश सहाय और जयनारायण प्रसाद इत्यादि

बिहार में नमक सत्याग्रह का प्रसार मुजफ्फरपुर, पटना, शाहाबाद, दरभंगा, मुंगेर, भागलपुर, सराय इत्यादि

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

क्षेत्रों में भी हुआ।

मुजफ्फरपुर में इस सत्याग्रह का नेतृत्व श्री रामदयालु सिंह, जनकधारी प्रसाद और रामनंदन सिंह ने किया। दरभंगा में सत्यनारायण सिंह के नेतृत्व में 17 अप्रैल 1930 को नमक कानून भंग किया गया। मुंगेर में श्री कृष्ण सिंह के नेतृत्व में 23 अप्रैल 1930 को गोगरी में नमक कानून भंग किया गया। शाह मुहम्मद जुबैर और नेमधारी सिंह के नेतृत्व में बड़हिया में नमक कानून भंग किया।

भागलपुर के बिहपुर थाना और गौरीपुर गाँव में महादेव सर्राफ और दीपनारायण अग्रवाल के नेतृत्व में 20 अप्रैल को नमक कानून भंग किया गया।

✦ **<u>पटना सत्याग्रह</u>**

पटना में 16 अप्रैल 1930 को नवासपिंड में अंबिका कांत सिंह और जंशुलाल गुप्त के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह चलाया गया, प्रत्युत्तर कारवाई में इन दोनों को गिरफ्तार कर बांकीपुर जेल भेज दिया गया तथा सत्याग्रही रामवृक्ष बेनीपुरी और अब्दुल बारी जख्मी हुए अनवरत चलता रहा। इसके बावजूद सत्याग्रह अनवरत चलता रहा।

✦ **<u>स्वदेशी सत्याग्रह</u>**

सविनय अवज्ञा आंदोलन के प्रारंभ होते ही महात्मा गाँधी को गिरफ्तार किया गया तत्पश्चात् आंदोलन को गति देने के लिए बिहार प्रदेश कांग्रेस द्वारा विदेशी वस्तुएँ एवं विदेशी शराब के बहिष्कार का प्रस्ताव पारित किया गया। इस सत्याग्रह की शुरुआत 9 मई 1930 को हुआ तथा स्वदेशी संघ की स्थापना सर अली इमाम द्वारा 16 मई 1930 में किया गया।

प्रख्यात इतिहासकार छविनाथ पांडे ने अपनी पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और बिहार में लिखा है, ''बिहार में विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार देश के अन्य स्थानों की तुलना में ज्यादा प्रभावी सिद्ध हुआ है। महिलाओं का सविनय अवज्ञा आंदोलन में योगदान इस आंदोलन में बिहार में महिलाओं की भूमिका उल्लेखनीय रही है, जिसमें महिलाओं ने जगह-जगह घूम कर, जनसभाएँ आयोजित करके लोगों में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को प्रोत्साहित किया, जिसमें विन्ध्यवासिनी देवी, श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती सी. सी. दास के नाम अग्रगणीय है।

12 अगस्त 1930 को चन्द्रावती देवी ने गया में एक सभा में भाषण करते हुए चौकीदारी कर नहीं देने का आग्रह किया।

नंगा सत्याग्रह

बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन का स्वरूप प्रतिक्षण परिवर्तित होता रहा, इसी क्रम में सत्याग्रह का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया गया जो नंगा सत्याग्रह के नाम से प्रसिद्ध है।

छपरा जेल में बंद सत्याग्रहियों ने रामविनोद सिंह के नेतृत्व में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करते हुए स्वदेशी वस्त्रों की प्राप्ति तक नग्न रहने का निर्णय लिया गया, परिणामस्वरूप जेल प्रशासन द्वारा स्वदेशी वस्त्र उपलब्ध करवाया गया।

✦ **<u>चौकीदारी कर आंदोलन विरोधी आंदोलन :-</u>**

बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्रमिक विकास में यमुना, सिंह के नेतृत्व में चौकीदारी कर विरोधी आंदोलन चलाया गया, जिसका विस्तार पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, सीवान, मुंगेर इत्यादि क्षेत्रों में हुआ। कांग्रेस कार्यकारिणी में 1 अगस्त 1930 को बंबई बैठक में बिहार की जनता को चौकीदारी करबंदी अभियान शुरू करने पर शुभकामनाएं दी।

✦ **बेगूसराय गोलीकांड-**

सविनय अवज्ञा आंदोलन के इस क्रम में 26 जनवरी 1931 को बेगूसराय के पनास नामक स्थान मे रघुनाथ ब्रह्मचारी के नेतृत्व में एक सभा आयोजित किया गया, प्रत्युत्तर कारवाई में तत्कालीन डी. एस. पी. वशीर अहमद ने गोली चलाने का आदेश दिया। जिससे घटनास्थल पर कई सत्याग्रही शहीद हो गए।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

✦ **<u>तारापर गोलीकांड</u>**

15 फरवरी 1932 को मुंगेर के तारापुर स्थान पर अनेको सत्याग्रहियों ने झंडा फहराने का प्रयास गोली चलाई किया, प्रत्युत्तर कारवाई में तत्कालीन कलक्टर के आदेश से इन सत्याग्रहियों पर गई, परिणामस्वरूप 50 से अधिक सत्याग्रहियों की शहादत हुई। यह घटना बिहार के जालियाँवाला बाग के नाम से जाना जाता है।

☞ बिहार में सविनय अवज्ञा आंदोलन का प्रभाव निर्णायक सिद्ध रहा परिणामस्वरूप लोगो में राजनैतिक चेतना का प्रसार हुआ। इस सत्याग्रह में समाज के लगभग सभी वर्गो के हिस्सों और उल्लेखनीय कार्य किया।

☞ बिहार में हुए तारापुर गोलीकांड में शहादतों के बलिदान को स्मरण करते हुए बिहार सरकार द्वारा 15 फरवरी को शहीद दिवस के रूप: में मनाने का निर्णय लिया गया।

●●●

KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे Candidate should not write in this margin

Q. भारत छोड़ो आंदोलन

Sol. भारत छोड़ो आंदोलन राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का सर्वाधिक व्यापक, परिणामोन्मुखी एवं चरमोत्कर्ष आंदोलन था, जिसने भारतीय भू-भाग पर ब्रिटिश सत्ता तथा औपनिवेशिक सत्ता के पूर्ण उन्मूलन में सहायक सिद्ध हुआ।

यह आंदोलन ऐसे समय में प्रारंभ किया गया जब वैश्विक जगत नव-परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। पश्चिम में युद्ध लगातार जारी था पूर्व में साम्राज्यवाद के खिलाफ आंदोलन तेज होते जा रहे थे।

1. इंग्लैण्ड द्वारा भारतीयों की इच्छा एवं कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व को विश्वास में लिए बिना भारत को द्वितीय विश्वयुद्ध में शामिल कर लिया गया। जिसके फलस्वरूप कांग्रेस नेतृत्व वाली प्रांतीय सरकारों का त्यागपत्र।
2. ब्रिटिश सरकार द्वारा उसकी जगह कांग्रेस विरोधी दलों द्वारा सरकार का गठन।
3. क्रिप्स मिशन का भारत आगमन और बिना कुछ दिए भारत से वापस जाना।
4. वायसराय लिनलिथिगो का अगस्त प्रस्ताव जो राष्ट्रवादियों को स्वीकार नहीं था।

उपरोक्त सभी कारण एक व्यापक और दीर्घकालिक जनसंघर्ष की ओर संकेत दे दहे थे।

✦ **आंदोलन का आरंभ एवं विस्तार**

14 जुलाई 1942 को वर्घा में कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक बुलाई गयी, इसमें भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव रखा गया और महात्मा गाँधी ने कहा- ''यदि संघर्ष का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया जाता, तो मैं देश के बालू से ही कांग्रेस से बड़ा आंदोलन खड़ा कर दूँगा।''

8 अगस्त 1942 को ग्वालिया टैंक मैदान, बंबई में अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम ने किया। इसमें भारत छोड़ो आंदोलन प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और महात्मा गाँधी ने कहा- ''मैं आपको एक मंत्र देना चाहता हूं जिसे आप अपने दिल में उतार ले और आपके हर सांस के साथ इस मंत्र की आवाज आनी चाहिए। ये मंत्र है- ''करो या मरो'' या तो हम भारत को आजाद कराएंगे या अपनी जान देंगे।

9 अगस्त 1942 को महात्मा गाँधी द्वारा संपूर्ण भारत में आंदोलन या आवहान किया गया तत्पश्चात प्रत्युत्तर कार्रवाई में ब्रिटिश सरकार द्वारा ''ऑपरेशन जीरो ऑवर'' के तहत विभिन्न राष्ट्रव्यापी नेता को गिरफ्तार करके अलग-अलग स्थानों पर रखा गया। (जैसे- महात्मा गांधी और सरोजिनी नायडू को आगा खाँ पैलेस, जवाहरलाल नेहरू, आचार्य जे०बी० कृपलानी, डॉ० पट्टाभि सीतारमैया, डॉ० प्रफूल्ल चंद घोष आदि को अहमदनगर में, राजेन्द्र प्रसाद को बांकीपुर जेल में, जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल में आदि को कैद किया गया।)

परिणामस्वरूप यह आंदोलन नेतृत्व विहीन हो गया। ध्यातव्य है कि फिर भी यह आंदोलन सर्वाधिक आक्रमक एवं स्वत:स्फूर्त था। इसी क्रम में बलिया में चितू पाण्डेय के नेतृत्व में पहली समानांतर सरकार का गठन हुआ। बंगाल के मिदनापुर जिले के तामलुक में जातीय सरकार का गठन हुआ।

1942 के आंदोलन के सर्वाधिक प्रभाव बंबई, बंगाल, बिहार, मद्रास में था। इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में बनारस, पटना तथा गाजीपुर में आंदोलन का केंद्र रहा।

✦ **भारत छोड़ो प्रस्ताव ने आंदोलन के प्रावधानों को इस प्रकार बताया :-**

1. भारत पर ब्रिटिश शासन का तत्काल अंत।
2. ब्रिटिश वापसी के बाद भारत की एक अस्थायी सरकार का गठन।
3. सभी प्रकार के साम्राज्यवाद और फाँसीवाद के खिलाफ अपनी रक्षा के लिए स्वतंत्र भारत की प्रतिबद्ध
4. ब्रिटिश शासन के विरूद्ध सविनय अवज्ञा आंदोलन को स्वीकृति देना।

✦ **महात्मा गाँधी द्वारा जनमानस को विभिन्न वर्गों के निर्देश:-**

1. **सरकारी कर्मचारी :-** अपनी नौकरी से इस्तीफा न दें बल्कि कांग्रेस के प्रति वफादारी की घोषणा करें।
2. **सैनिक :-** सेना के साथ रहे लेकिन हमवतन पर गोली चलाने से बचें।

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

3. **किसान** :- यदि जमींदार सरकार विरोधी है, तो सहमत किराए का भुगतान करें अगर वे सरकार समर्थक है तो किराए का भुगतान न करें।
4. **विद्यार्थी** :- यदि उनमें पर्याप्त आत्मविश्वास है तो वे पढ़ाई छोड़ सकते है।
5. **राजकुमार** :- लोगों का समर्थन करें और संप्रभुता को स्वीकार करें।
6. **रियासतों के लोग** :- शासक का समर्थन तभी करें जब वह सरकार विरोधी हो स्वयं को भारतीय राष्ट्र का हिस्सा घोषित करें।

✦ **भारत छोड़ो आंदोलन में जनभागीदारी** :- जनभागीदारी कई स्तरों पर भी इसमें युवक, महिलाओं, किसानों, प्रशासन एवं पूलिक के निचले तबके से संबंद्ध सरकारी अधिकारियों ने अभूतपूर्व भूमिका निभाई।

☞ **आंदोलन का स्वरूप** :- शुरूआत में यह आंदोलन अहिंसक था लोगों ने जुलूस निकालना और कामकाज रोक दिया। ब्रिटिश सरकार ने अपने दमनकारी नीतियों द्वारा लोगों को हिंसात्मक और उग्र बनाया। गाँधीवादी सिद्धांतों को आधार मानते हुए कई स्थानों पर लोगों ने विरोध के अपने विशिष्ट तरीके को अपनाया जो निम्न है:-

- ब्रिटिश प्रभुत्व के प्रतिकों जैसे :- पुलिस स्टेशन, रेलवे और डाकघरों पर हमला।
- तार सेवा, टेलीफोन, रेल लाइन और बिजली लाइनों को बाधित किया गया।
- सार्वजनिक इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया, सत्याग्रहियों ने गिरफ्तारी की पेशकश की अन्य राष्ट्रप्रेमी भी आगे आए।
- यातायात में बाधा और हड़ताल आदि।

✦ **ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रिया** :-

इस दौरान इंडियन प्रेस नेशनल हेराल्ड और हरिजन पर प्रतिबंध लगाया गया।
आंदोलनकारियों और प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार कर लाठी चार्ज, कोड़े, गोलीबारी, मशीनगन इत्यादि का सामना करना पड़ा, साथ ही कांग्रेस के कार्यालयों को जलाया गया और भारत शासन के रक्षा कानून को लागू करने का काम किया।
बेवेल ने शिमला में सर्वदलीय सम्मेलन का आयोजन कर सभी दलों के नेताओं को छोड़ दिया।
इसके साथ ही आंदोलन शिथिल हो गया।

✦ **बिहार में जनभागीदारी**

इस आंदोलन में बिहार में बिना किसी नेतृत्व का जनभागीदार बनाए रखा। लगभग 15000 लोगों की गिरफ्तारी हुई, 7000 से ज्यादा लोगों को सजा हुई और 1374 बिहार के जनभागिदारों ने जान गँवाई।
इस आंदोलन के शुरूआत में ही कई बड़े नेताओं को गिरफ्तार कर लिए गये। इनमें डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जिन्हें गिरफ्तार कर पटना के बांकीपुर जेल में भेजा गया। इसका प्रबल विरोध किया गया और राष्ट्रीय झण्डे लहराए गये।

✦ **छात्रों का योगदान**

11 अगस्त 1942 की अविस्मरणीय गोलीकाण्ड ने आंदोलन के इतिहास में काले धब्बे के समान अपनी जगह बनाई। इस दिन विद्यार्थियों के एक जुलूस ने सचिवालय भवन के सामने विधायिका भवन पर झण्डा फहराने की कोशिश की जिसपर पटना के तत्कालिक जिलाधिकारी डब्लू. जी. आर्चर के आदेश पर गोली चलाई गई, जिससे सात विद्यार्थियों की मृत्यु हुई और अनेक घायल हुए।
स्वतंत्रता संग्राम के इस कड़ी में बलिदान वाले सात क्रांतिकारी वीर के नाम निम्न हैं:-

1. उमाकान्त सिन्हा - सारण
2. रामानन्द सिंह - पटना
3. जगपति कुमार - गया
4. राम गोविंद सिंह - पटना
5. देवीपद चौधरी - भागलपुर

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

6. राजेन्द्र सिंह - सारण
7. सतीश प्रसाद झा - भागलपुर

इस गोलीकाण्ड के विरोध में 12 अगस्त को पूरे पटना में हड़ताल रखी गई। इसी दिन शाम में जगत नारायण लाल की अध्यक्षता में प्रस्ताव पारित हुआ। जिसमें ब्रिटिश सरकार के संचार-सुविधाओं और सरकारी कार्यों को ठप करने का निर्णय लिया गया।

जिसके निम्न परिणाम देखने को मिलें:-

- बिहार में कई जगहों पर रेल पटरी उखाड़ दी गई।
- तार सेवा और टेलीफोन के लाइन को काट दिया गया।
- रेलवे स्टेशनों, डाकघरों अन्य सरकारी भवनों को जला दिया गया और साथ ही पुलिस एवं पुलिस-स्टेशनों पर भी आक्रमण किया गया।
- फूलेना प्रसाद श्रीवास्तव को सिवान आने पर राष्ट्रीय झण्डे फहराने की कोशिश में पुलिस के गोलियों का शिकार होना पड़ा।
- जगलाल शरण चौधरी द्वारा सारण पुलिस थाने को जला दिया गया।
- कटिहार थाने पर झण्टा फहराने की कोशिश में ध्रुव कुमार को और गया में कुर्था थाने पर श्याम बिहारी लाल को पुलिस की गोली से मृत्यु हो गई।
- इसके अलावा सोनपुर, गोविन्दपुर, दरभंगा, शाहाबाद, अरवल, पूर्णिया, मुंगेर, सहरसा आदि क्षेत्रों में भी आंदोलन काफी हिंसात्मक हो गया था।

✦ **महिलाओं का योगदान**

इस आंदोलन में महिलाओं ने काफी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। श्रीमति शांति देवी द्वारा छपरा में एक जुलूस निकाला गया जिसपर लाठी चार्ज के आदेश के बाद महिलाओं ने एक नारा दिया ''पुलिस हमारा भाई है'' जिससे भारतीय सिपाहियों का मन प्रफूल्लित हो उठा और उन्होंने लाठी चार्ज करने से मना कर दिया। अन्य महिलाओं की भागीदारी, श्रीमती भगवती देवी व राजवंशी देवी पटना में जुलूस का नेतृत्व, श्रीमती सरस्वती देवी- हजारीबाग में नेतृत्व प्रदान किया।

☛ महिलाओं ने चरखा समिति में भाग ली और विदेशी वस्त्रों के दुकान पर तथा शराब की दुकान पर धरना दी।

☛ कुसुम देवी जैसी महिला ने पुरुष जैसी भेष में साइकिल से संदेश पहुँचाने का कार्य करती थी। छात्राओं (स्वराज ट्रेन) आदि अनेक महिलाओं की भागीदारी रही।

✦ **किसानों का योगदान**

भारत छोड़ों आंदोलन की सक्रियता ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखी गई, 1930 के दशक में चल रहे किसान आंदोलन अखिल भारतीय किसान सभा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

✦ **स्थानीय संगठनों का योगदान**

सियाराम दल :- इसका महत्व भागलपुर जिले के निवासी सियाराम सिंह द्वारा किया गया। यह एक गुपत शस्त्र संगठन था जो नौजवानों को अस्त्र-शस्त्र चलाने का प्रशिक्षण देता था।

इसके अलावा समाजवादी दल, फारवर्ड ब्लॉक आदि दलों ने अहम भूमिका निभाई।

पत्र-पत्रिकाओं का योगदान

☛ इस आंदोलन को और प्रखर रूप देने के लिए मुंगेर से ''आजाद हिन्दुस्तान'' पत्रिका निकाली गई।

✦ **आदिवासी भागीदारी**

इस आंदोलन में उरॉव जनजाति से संबंध ताना भगत आंदोलनकारियों का योगदान अतुलनीय रहा। रोहतास (डालमिया नगर) के श्रमिकों ने भी हड़ताल और प्रदर्शन किए जिससे उद्योग पर व्यापक असर पड़ा।

✦ **समानान्तर सरकार का गठन**

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin

इस आंदोलन के दौरान बिहार के कुछ क्षेत्रों में समानान्तर सरकार का गठन किया गया जेसे चंपारण के गोविंदगंज थाना क्षेत्र में स्वतंत्र सरकार बना, हाजीपुर, भागलपुर, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी एवं दरभंगा आदि क्षेत्रों में क्रांतिकारियों ने अपनी स्वतंत्र सरकार बनाई।

✦ **आजाद दस्ता का गठन**

भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार के समाजवादियों जयप्रकाश नारायण, राम मनोहर लोहिया, अरूणा आसफ अली, गंगा शरण मिश्रा तथा अन्य लोगों ने महत्वपूर्ण एवं व्यापक तौर पर अहम भूमिका निभाई। आंदोलन प्रारंभ होते ही ''ऑपरेशन जीरो आवर'' के तहत जय प्रकाश नारायण एवं अन्य क्रांतिकारियों की गिरफ्तारी हो गई। जय प्रकाश नारायण को हजारीबाग जेल भेजा गया जहां से 9 नवंबर 1942 दीपावली की रात अन्य साथी सूरज नारायण सिंह, रामानंद मिश्रा, योगोन्द्र शुक्ल के साथ भाग निकले।

इसी क्रम में जयप्रकाश नारायण बिहार के उत्तरी सीमा पर स्थित नेपाल की तराई के जंगलों में भूमिगत हो गए। इसी दौरान मार्च 1943 में जय प्रकाश नारायण के द्वारा राजविलास (नेपाल की तराई कं जंगलों में) प्रथम गोरिल्ला प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में ''आजाद दास्ता'' की स्थापना की, जिसमें उन्हें सूरज नारायण सिंह, कार्तिक प्रसाद सिंह, ब्रजकिशोर प्रसाद सहित कई लोगों का साथ मिला। इसमें रेडियो एवं प्रचार सहित कई लोगों का साथ मिला। इसमें रेडियो एवं प्रचार विभाग के प्रमुख राम मनोहर लोहिया बनाए गए तथा उषा मेहता ने बंबई में भूमिगत कांग्रेस रेडियो की शुरूआत की थी।

✦ **आजाद दास्ता निम्नलिखित तीन तरीके से कारवाई किए :-**

1. परिवहन और संचार के साधनों को नष्ट करना।
2. औद्योगिक परिधानों को नष्ट करना।
3. सार्वजनिक कार्यालयों में आग लगाना।

दमनकारी प्रयासों के बावजूद भी भूमिगत आंदोलनों का महत्वपूर्ण योगदान भारत छोड़ो आंदोलन की भावना को जीवंत करता रहा।

✦ **महत्व**

इस आंदोलन की सबसे बड़ी महत्वपूर्ण बिंदु स्वतंत्रता संग्राम की मांग को राष्ट्रीय आंदोलन के तत्कालिक लक्ष्य के अधीन ही रखा।

इस आंदोलन में आम लोगों ने अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन किया और लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जागृत रखा।

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन शुरूआत में विफल कर दिया गया लेकिन भारत में राष्ट्रवादी भावनाओं की गहराई और लोगों के संघर्ष और बलिदान की अद्‌भुत क्षमता को प्रदर्शित किया तथा भारतीयों का पूर्ण स्वराज ही अंतिम उद्‌देश्य की ओर ले गया।

●●●

इस हाशियें में उम्मीदवार कुछ न लिखे
Candidate should not write in this margin